तृतीय–अध्याय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

अध्याय–तृतीय

शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया

3.1 प्रस्तावना –

समस्याओं के निराकरण में वैज्ञानिक विधि को अपनाने का नाम ही अनुसंधान है। वास्तव में अनुसंधान एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या का विश्वसनीय समाधान ज्ञात किया जाता है। अनुसंधान प्रश्न करना, जॉच करना, निरीक्षण करना, योजनाबद्ध अध्ययन, व्यायाम परीक्षण और तत्परतायुक्त उद्देश्य, सामान्यीकरण की प्रक्रिया है। शोध प्रविधि किसी भी शोध कार्य में यह संभव नहीं हो पाता कि सभी लक्ष्यगत समष्टि को अध्ययन के शामिल किया जाये। अनुसंधान का मुख्य कार्य अपने क्षेत्र की विषय सामग्री में सुधार लाना है, चाहे वह औषधि विज्ञान का क्षेत्र हो या शिक्षा का क्षेत्र हो अतः इसे ज्ञान के रूप में नहीं वरन् मानवीय क्रियाओं के रूप में समझा जाना चाहिए अनुसंधान कार्य में सही दिशा में अग्रसर होने के उद्देश्य से यह आवश्यक होता है कि शोध प्रबंध का व्यवस्थित अभिकल्प या रूपरेखा तैयार की जाये क्योंकि यह अभिकल्प ही शोधकर्ता को निश्चित दिशा प्रदान करता है। इसमें न्यादर्श के चयन की अपनी विशेष भूमिका होती है। न्यादर्श जितने अधिक सुदृढ होगें, शोध के परिणाम भी उतने .ही विश्वसनीय परिशुद्ध होगें। न्यादर्श के चयन के पश्चात् उपकरणों एवं तकनीकी का चयन भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि इसी आधार पर प्रदत्तों का संकलन किया जाता है। तत्पश्चात एक उपयुक्त सांख्यिकीय विधि के माध्यम से प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या पर निष्कर्ष निकाला जाता है। तब कही जाकर एक शोध कार्य पूर्ण हो पाता है।

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अतः इस कार्य हेतु सर्वेक्षण प्रणाली का चयन मध्यप्रदेश राज्य के भोपाल जिले के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करने के लिये किया गया है।

3.2 न्यादर्श एवं उसका चयन –

जब किसी जनसंख्या (इकाई या मनुष्य का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिये उसकी कुछ इकाईयों को चुन लिया जाता है। तथा चुनी हुई, इकाईयों के समूह को न्यादर्श कहते हैं।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा न्यायदर्श का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। इसके लिये म.प्र. राज्य के भोपाल जिले के नरेला विधानसभा क्षेत्र से 10 उच्च प्राथमिक विद्यालय जो अशोकागार्डन एवं गोविंदपुरा में स्थित है। उनको चुना गया है। शासकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् ऐसे शिक्षक जो नियमित है उनको न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

चयनित विद्यालयों में कुल 100 शिक्षक कार्यरत् थे। 100 शिक्षकों में से यादृच्छिक विधि का उपयोग करते हुये उनमें से 60 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। इन 60 शिक्षकों में महिला शिक्षक व पुरूष शिक्षक दोनों ही शामिल है। इस प्रकार न्यादर्श का विवरण निम्न सारणी में है।

तालिका क्रमांक 3.2

न्यादर्श का प्रारूप

विद्यालय का नाम	शिक्षकों की संख्या	चयनित शिक्षक	शिक्षक		कुल
			म.	पु.	
1. शा.उ.प्रा. शाला हिनौतिया भोपाल	4	1	–	1	1
2. शा.उ.प्रा. शाला फरहत अब्जा भोपाल	20	14	13	1	14
3. शा.क.उ.प्रा. शाला बरखेड़ी	6	3	2	1	3
4. शा.बा.उ.प्रा. शाला रशीदिया	10	4	4	–	4
5. शा.क.उ.प्रा. शाला हबीबिया	10	7	6	1	7
6. शा.बा.उ.प्रा. शाला हबीबिया स्टेशन क्षेत्र	10	7	7	–	7
7. शा.उ.प्रा.शा. लक्ष्मी मंडी अशोका गार्डन	10	6	6	–	6
8. शा.उ.प्रा.शा.बिजली नगर	10	8	5	3	8
9. शा.मा.गांधी उ.प्रा.शा. बरखेड़ा	10	4	4	–	4
10. शा.उ.प्रा.शा.टी.आर.टी. सुभाष नगर	10	6	5	1	6
कुल	**100**	**60**	**52**	**8**	**60**

3.3 शोध में प्रयुक्त चर –

प्रस्तुत अध्ययन विभिन्न पृष्ठ भूमि के **"उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन"** के अंतर्गत निम्नलिखित चरों का अध्ययन किया गया है। शैक्षिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत शिक्षकों की प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण/शहरी, शैक्षिक योग्यता शैक्षिक प्रशिक्षण सहित एवं शैक्षिक प्रशिक्षण रहित, शिक्षण अनुभव 5 वर्ष व 5 वर्ष से अधिक को शामिल किया गया।

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त चर

- ❖ **शैक्षिक मूल्य**
- ❖ **शैक्षिक योग्यता**
- ❖ **शैक्षिक अनुभव**

3.4 शोध अभिकल्प –

प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान की प्रविधि का प्रयोग किया गया। जिसके अंतर्गत शिक्षकों के शैक्षिक मूल्यों का उनकी पृष्ठभूमि के आधार पर शैक्षिक मूल्यों की तुलना की गई है।

3.5 शोध में प्रयुक्त उपकरण –

शोध की सफलता उसके तथ्यों के एकत्रित करने हेतु चुने गये उपकरणों पर निर्भर करती है। उपरोक्त नियम को ध्यान में रखते हुये शैक्षिक मूल्य से संबंधित आँकड़ों के संग्रहण हेतु शोधकर्ता ने शैक्षिक मूल्य परिसूची का निर्माण एवं विकास किया एवं शिक्षकों की पृष्ठभूमि ज्ञात करने के लिये एक प्रश्नावली को तैयार किया गया। उपलब्ध मूल परिसूचियों में मूल्य रूप से शिक्षक के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। जबकि हमें शैक्षिक मूल्य परिसूची उपकरण की आवश्यकता थी जो बना हुआ नहीं था स्वनिर्मित परिसूची को एस. पी. कुल श्रेष्ठ एवं अहलूवालिया की शिक्षक मूल्य परिसूची को आधार बनाया गया। शैक्षिक मूल्य परिसूची को पाँच भागों में बाँटा गया। जो निम्न प्रकार है। (1) शैक्षिक प्रतिबद्धता (2) शिक्षण क्षमता (3) व्यवहारिक क्षमता (4) शिक्षण

कौशल (5) समस्या समाधान। शैक्षिक मूल्य परिसूची के प्रत्येक खण्ड के अंतर्गत 10–10 कथन का निर्माण किया गया। प्रत्येक कथन का उत्तर चार बिन्दु मापनी के अंतर्गत लिया गयाा इस प्रकार निर्मित शैक्षिक मूल्य परिसूची में 50 कथन शामिल किये गये। उपरोक्त परिसूची पर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल में उपलब्ध विशेषज्ञों की राय एवं सुझाव लिये गये। इन सुझावों के अनुसार कुछ कथन की पुनरावृत्ति एवं अनावश्यक होने के कारण उन्हें निरस्त कर दिया गया। अतः शैक्षिक मूल्य परिसूची में अंतिम रूप से 40 कथनों का समावेश किया गया। प्रत्येक कथन में चार विकल्प हैं। प्रत्येक घटक में 8 कथन का समावेश है। इस परिसूची को शिक्षकों के छोटे समूह पर प्रयोग में लाया गया तथा विशेषज्ञों द्वारा सुझाव मांगे गये। उन सुझावों को अंतिम सूची में जोड़ा गया।

3.6 शैक्षिक मूल्य परिसूची उपकरण का निर्माण एवं प्रशासन –

शैक्षिक मूल्य परिसूची (E.V.I.) स्वनिर्मित है। शैक्षिक मूल्य परिसूची में 40 कथन है। जिनको एस.पी. कुलश्रेष्ठ एवं अहलूवालिया की शिक्षक मूल्य परिसूची के आधार पर निर्माण किया गया है। प्रत्येक कथन के चार उत्तर है। जिसमें एक भी उत्तर सही या गलत नहीं है। उत्तरदाता को अपनी पहली प्राथमिकता दूसरी तथा तीसरी, चौथी प्राथमिकता दर्ज करनी है। इस परिसूची को हल करने में 60 मिनट का समय दिया गया है। इस प्रकार प्रत्येक घटक के आठ कथन लिये गये है। इन सभी मूल्यों का उच्च स्कोर 160 तथा निम्न स्कोर 40 होगा। ठीक इसी प्रकार घटक के आधार पर उच्च स्कोर 32 तथा निम्न स्कोर 8 होगा। उदाहरण के तौर पर उत्तरदाता से सभी 40 प्रश्नों को वांछनीयता के आधार पर प्रथम प्राथमिकता देने पर उसको चार अंक दिये जायेंगे। इस प्रकार शैक्षिक मूल्य के स्कोर 160 होंगे। इसी प्रकार अगर उत्तरदाता वांछनीयता के आधार पर द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ देता है तो इन मूल्यों के स्कोर निम्न होगे $3 \times 40 = 120$, $2 \times 40 = 80$, $1 \times 40 = 40$

3.7 प्रदत्तों का संग्रहण –

प्रदत्तों के संग्रहण हेतु शिक्षा विभागाध्यक्ष से एक अनुशंसा पत्र प्राप्त किया। उस पत्र की छायाप्रति लेकर शोधकर्ता विद्यालयों के विभिन्न प्रधानाध्यापक से मिला उन्हें आग्रहपूर्वक बताकर शिक्षकों से एकत्रित होने के लिये कहा शिक्षकों से जानकारी प्राप्त कर उसके बाद दूसरे दिन समय लेकर उनसे स्वनिर्मित परिसूची भरने को कहा गया।

3.8 विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ –

आँकड़ों के विश्लेषण हेतु संग्रहित प्रदत्तों को संगठित तथा वर्गीकृत करने के पश्चात् दो समूहों की तुलना करने के लिये 'टी' परीक्षण का उपयोग किया गया।